Answers to RSPL/3

खंड–क

1. (क) अशिक्षा व अज्ञानता से भारतीय किसानों का जीवन बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इनके कारण वे अंधविश्वास में आस्था रखते हैं। वे छोटे परिवार का महत्त्व नहीं समझ पाते और अपना परिवार काफ़ी बड़ा कर लेते हैं, जिससे घर में जीवनोपयोगी वस्तुओं की कमी होने लगती है और खुशहाली सिमट जाती है।

(ख) भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी भारत की अधिसंख्य आबादी कृषि पर निर्भर करती है। इस कारण यदि किसानों की स्थिति में सुधार आ जाए, तो भारत की स्थिति भी सुधर सकती है।

(ग) किसानों की स्थिति में सुधार के लिए कृषि-कार्य हेतु बैंक, सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं द्‌वारा मदद दी जाए। किसानों को उन्नत बीज, खाद, कीटनाशक आदि सस्ते दामों पर उपलब्ध कराए जाएँ, कृषि का औद्‌योगिकीकरण किया जाए, उनके बच्चों को अच्छी एवं सस्ती शिक्षा दी जाए तथा उनके उत्पादन को ऊँचे दामों पर बेचने का प्रबंध किया जाए।

(घ) अन्नदाता किसानों के खुशहाल होने पर देश की गणना खुशहाल देशों में होते देर नहीं लगेगी।

(ङ) भूखा और प्यासा–द्‌वंद्‌व समास।

2. (क) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह एक-दूसरे के सुख-दुख बाँटकर ही सुखी रह सकता है। इसलिए एक-दूसरे से मिलना-जुलना बहुत ज़रूरी है, किंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज सामाजिकता की भावना तेज़ी से घटती जा रही है।

(ख) 'बिना मिले-जुले हम मशीन ही तो हो जाएँगे, संवेदनशून्य कलपुर्ज़े भर।' इस पंक्ति का आशय यह है कि यदि सामाजिकता खत्म हो गई, तो मनुष्य के पास कुछ भी नहीं बचेगा। संवेदनाएँ हमें इंसान बनाती हैं और इनके द्‌वारा ही हम एक-दूसरे के सुख-दुख महसूस कर पाते हैं। मशीनों और कलपुर्ज़ों में संवेदनशीलता का गुण नहीं होता। अगर मनुष्य भी सामाजिकता व संवेदनाओं से रहित हो जाए, तो उसमें तथा मशीन व कलपुर्ज़ों में कोई भी अंतर नहीं रह जाएगा।

(ग) मानवता को ज़िंदा रखने के लिए संवेदनशीलता इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसी गुण के द्‌वारा हम दूसरों के सुख व दुख को अपने अंदर महसूस कर पाते हैं। इसके न होने पर हमारी स्थिति साँस लेती मशीन से अधिक नहीं होगी।

(घ) यह कविता शहरों में समय की कमी से घटती जा रही सामाजिकता व संवेदनशीलता जैसी गंभीर समस्या पर आधारित है।

(ङ) मूल शब्द–समाज, प्रत्यय–इक।

खंड–ख

3. (क) यद्‌यपि मैंने सोने की कोशिश तो बहुत की, फिर भी नींद नहीं आई।

(ख) आप कार्यक्रम में समय पर पधारे और अपने संबोधन से आपने सबका दिल जीत लिया।

(ग) सरल वाक्य।

4. (क) हाथियों के झुंड द्‌वारा नदी में नहाया जा रहा था।

(ख) हमारे द्‌वारा हिंदी से प्रेम किया जाना चाहिए।

(ग) हमें कभी निराशा का भाव मन में नहीं लाना चाहिए।

(घ) कर्तृवाच्य।

5. (क) **जापानी** – गुणवाचक विशेषण, 'विशेष्य–लोग', बहुवचन, पुल्लिंग।

(ख) **के बिना** – संबंधबोधक अविकारी पद, जल और जीवन पदों के बीच संबंध जोड़ने का कार्य कर रहा है।

(ग) **इसलिए** – समुच्चयबोधक अविकारी पद, दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य कर रहा है।

(घ) **जल्दी-जल्दी** – रीतिवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया–'चलाओ'।

6. (क) वीभत्स रस के संचारी भाव - घृणा, डर आदि।

(ख) शांत रस का स्थायी भाव 'निर्वेद' है।

(ग) वीर रस पर आधारित काव्य-पंक्तियाँ–

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत–
वीरों का कैसा हो वसंत?

(घ) शांत रस

खंड–ग

7. (क) सभ्यता को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि संस्कृति का परिणाम सभ्यता है। यह मूर्त होता है। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने, हमारे गमनागमन के साधन, हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके आदि सब हमारी सभ्यता हैं। संस्कृति में निहित योग्यता के द्वारा जितनी भी चीजों का आविष्कार होता है, वे सब सभ्यता के अंतर्गत शामिल होते हैं।

(ख) संस्कृति और असंस्कृति के बीच की विभाजक रेखा है लोक कल्याण की भावना। कहने का तात्पर्य यह है कि संस्कृति के साथ कल्याण की भावना जुड़ी होती है, लेकिन जब संस्कृति का कल्याण की भावना से नाता टूट जाता है तो वह असंस्कृति कहलाती है। मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का विकास कराती है, उसे असंस्कृति कहा जाएगा।

(ग) यदि संस्कृति के साथ लोकहित एवं भलाई का नाता टूट जाए तो वह असंस्कृति बन जाती है।

8. (क) 'महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है, जिससे इसे बनाया गया है'–पंक्ति के माध्यम से लेखक यह कहना चाहते हैं कि मूर्ति के रंग-रूप या कद का महत्त्व नहीं, बल्कि महत्त्व देशभक्ति की भावना का है, जिसके कारण यह मूर्ति ऐसे स्थान पर लगाई गई है कि सभी उसे देखें और प्रेरणा प्राप्त करें। मूर्ति आकर्षक है कि नहीं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि नेताजी के प्रति लोगों में श्रद्धा है, प्रेम है और लोग उनके योगदान के लिए उन्हें आदर्श मानते हैं।

(ख) शहनाई की मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ जी का जीवन एवं व्यक्तित्व में अनेक ऐसी विशेषताएँ थीं, जिससे युवा पीढ़ी को हमेशा प्रेरणा मिलती रहेगी; जैसे–संगीत साधना के प्रति पूर्ण निष्ठा, सादा जीवन उच्च विचार, हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक, भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव, प्रदर्शन की भावना का न होना, संगीत के क्षेत्र में शहनाई को उच्च स्थान दिलाना, शहनाई में जादू-सा असर पैदा करना तथा परमात्मा के प्रति हमेशा कृतज्ञ होना। उनकी अपने कार्य के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की भावना रखने वाली विशेषताएँ सभी के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं।

(ग) 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि जिस प्रकार देवदार वृक्ष विशाल एवं छायादार होता है, उसी तरह फ़ादर बुल्के का व्यक्तित्व भी विशाल था। जो भी उनकी शरण में आता, वह शांति और सुकून पाता। देवदार की छाया की तरह वे सभी को अपने स्नेह एवं शुभाशीषों से भर देते। फ़ादर की नीली आँखों से वात्सल्य झरता था। वे सभी के मंगल की कामना दिल से करते और सभी के सुख-दुख में घर के सदस्य की तरह शामिल होते। देवदार के वृक्ष की तरह उनके लिए कोई पराया नहीं था, उनसे जुड़ने वाले सभी लोग उनके आत्मीय-जन बन जाते।

(घ) कुछ परंपरावादी दकियानूसी लोग स्त्री-शिक्षा के विरोध में तर्क देते हुए कहते हैं कि प्राचीन नाटकों में कुलीन स्त्रियों से अनपढ़ों की भाषा में बातें कराई गई हैं, इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में स्त्रियों को पढ़ाने का चलन नहीं था। उनका तर्क है कि स्त्रियों को पढ़ाने का ही दुष्परिणाम था कि शकुंतला ने कटु वाक्य कहे। अनपढ़-गँवारों की भाषा पढ़ाना भी स्त्रियों को बरबाद

करना है। वास्तव में परंपरावादी दकियानूसी लोगों का ऐसा विचार एवं व्यवहार दंडनीय है क्योंकि जनसंख्या के आधे हिस्से को, आधी आबादी को अनपढ़ रखने की साज़िश वास्तव में समाज को पिछड़ा बनाए रखने की साज़िश होगी। शिक्षा यदि अनर्थकारी है, तो यह स्त्रियों एवं पुरुषों दोनों पर समान रूप से लागू होता है। यह कुतर्क है, जिसका प्रत्येक स्तर पर विरोध होना चाहिए और केवल उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए, जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ावा देते हैं।

9. (क) कवि अपनी आत्मकथा कहने का इच्छुक इसलिए नहीं है क्योंकि आत्मकथा लिखने की प्रक्रिया में जीवन से जुड़े दुखों, अभावों तथा असफलताओं व दुर्बलताओं का उल्लेख करना होगा। मानव का स्वभाव है कि वह दूसरों के दुखों को जानकर उसकी सरलता या भोलेपन का उपहास उड़ाता है, जिससे कवि बचना चाहता है। आत्मकथा लिखने से कवि को धोखा देने वाले मित्रों के विश्वासघात की कलई भी खुलेगी।

(ख) 'तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे, यह गागर रीति'—पंक्ति में 'तुम' शब्द ऐसे मित्रों के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो कवि के दुखों को देखकर आनंद लेते हैं, उसका उपहास उड़ाते हैं। उन्हें यह जानकर बहुत अच्छा लगेगा कि कवि की गागर, रस से पूरी तरह खाली है अर्थात् कवि के जीवन में आनंद जैसी चीज़ ही नहीं है।

(ग) 'यह विडंबना! अरी सरलते! तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं'—पंक्ति में कवि अपने भोलेपन, निष्कपट व्यवहार तथा सरल स्वभाव की हँसी उड़ाने की बात कर रहा है।

10. (क) महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का प्रिय विषय है बादल। बादल एक ओर तो पीड़ित प्यासे जन की आकांक्षा को पूर्ण करनेवाला है, तो दूसरी ओर वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति की चेतना को संभव करनेवाला है। बादलों से मन में उत्साह उत्पन्न होता है, इसीलिए कवि ने कविता का शीर्षक 'उत्साह' रखा है, जो पूरी तरह सार्थक है।

(ख) 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' शब्द विगत की सुखद स्मृतियों के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। कवि उन्हें छूने से मना करता है क्योंकि ये वर्तमान के दुख को और अधिक गहरा कर देती हैं। व्यक्ति विगत के सुखद पलों की काल्पनिकता से चिपककर वर्तमान से विमुख होने लगता है, जिससे वर्तमान भी नष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त, वह भावुक एवं कल्पनाप्रिय हो जाता है, जिससे उसमें वास्तविकताओं का सामना करने की शक्ति नहीं रह जाती है।

(ग) मुख्य गायक एवं संगतकार के बीच जुड़ी कड़ी समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कई ऐसे क्षेत्र होते हैं जिसमें पर्दे के सामने प्रसिद्ध होने वाले की भूमिका पर्दे के पीछे रहने वाले लोग तैयार करते हैं और वे ही अपने परिश्रम एवं त्याग से पर्दे के सामने वाले को महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। प्रत्येक समाज नींव रखने वाले ऐसे लोगों की आवश्यकता महसूस करता है तथा संगतकार जैसे लोगों की भूमिका के कारण ही समाज को कई क्षेत्रों में अग्रणी व्यक्ति प्राप्त होते हैं। यदि ऐसे संबंध समाज में न बन पाएँ, तो अनेक बार सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने वाले लोग जब लड़खड़ाने लगेंगे, तो उस समय उन्हें सँभालने वाला कोई नहीं होगा और अंततः समाज महान लोगों के योगदान से वंचित रह जाएगा।

(घ) 'कन्यादान' कविता में माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी इसलिए लग रही है क्योंकि उसने अपना पूरा जीवन अपनी बेटी को बनाने व सँवारने में ही लगा दिया। माँ के सबसे निकट एवं उसके सुख-दुख की साथी उसकी बेटी ही होती है। माँ उसे गढ़ने में अपना सारा जीवन, अपनी समूची ममता एवं शक्ति लगा देती है। स्त्री-जीवन से जुड़ी समस्याओं पर माँ-बेटी एक-दूसरे से बातचीत करती हैं। माँ अपने सपने को अपनी बेटी में ही साकार करने की कोशिश करती है।

11. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक ने बचपन में अपने मित्रों के साथ अपने अध्यापक मूसन तिवारी को चिढ़ाकर उनका मज़ाक उड़ाया था, जिसे कभी भी उचित नहीं कहा जा सकता है। वास्तव में गुरु देवता के समान होते हैं। वे हमें ज्ञान प्रदान कर हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं, हमारे सुनहरे जीवन की नींव रखते हैं और हमें जागरुक एवं बौद्धिक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हीं के मार्गदर्शन में हम संस्कारी एवं योग्य मनुष्य बनते हैं। वे हमारी बुराइयों को दूरकर हमें अच्छा एवं गुणी इंसान बनाते हैं।

जो बच्चे अपने गुरु को, शिक्षक को चिढ़ाते या परेशान करते हैं, उन्हें इस संबंध में विस्तार से समझाने की आवश्यकता है। उन्हें भली प्रकार नैतिक शिक्षा देकर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

अथवा

'नयी दिल्ली में सब था– सिर्फ़ नाक नहीं थी'–कथन के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि आज़ाद भारत में सब कुछ था, पर भारतीय अधिकारियों में आत्मसम्मान नहीं था। जॉर्ज पंचम ने भारत तथा भारतीयों के लिए कोई अच्छा काम नहीं किया था, बल्कि भारतीयों पर अत्याचार एवं जुल्म ही किए थे, फिर भी भारतीय अधिकारी अपने आत्मसम्मान को भूल उसकी मूर्ति की नाक को लगाने में जुटे थे। वस्तुतः यहाँ 'नाक' सम्मान का पर्याय है। जॉर्ज पंचम के सम्मान की चिंता में लगे भारतीय अधिकारियों ने ऐसा करके अपने सम्मान की चिंता नहीं की, अनेक भारतीयों के सम्मान की चिंता नहीं की।

खंड–घ

12. (क) **बेरोज़गारी : एक गंभीर समस्या**

बेरोज़गारी का अर्थ है– कार्यक्षमता होने के बावजूद एक व्यक्ति को उसकी आजीविका के लिए किसी रोज़गार का न मिलना। रोजगार के अभाव में व्यक्ति मारा-मारा फिरता है। ऐसे में तमाम तरह के अवसाद उसे घेर लेते हैं। फिर तो न चाहते हुए भी कई बार वह ऐसे कदम उठा लेता है, जिनकी कानून इज़ाज़त नहीं देता। बेरोज़गारी अथवा बेकारी हमारे देश की ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की एक बड़ी समस्या है।

हमारे देश में बेरोज़गारी के कई कारण हैं। जनसंख्या में तेज़ी से हो रही वृद्धि इसका सबसे बड़ा कारण है। बढ़ती जनसंख्या के जीवन-निर्वहन हेतु अधिक रोजगार सृजन की आवश्यकता होती है, ऐसा न होने पर बेरोज़गारी में वृद्धि होना स्वाभाविक है। भारत में व्यावहारिक के बजाए सैद्धांतिक शिक्षा पर जोर दिया जाता है। फलस्वरूप व्यक्ति के पास उच्च शिक्षा की उपाधि तो होती है, परंतु न तो वह किसी कार्य में दक्ष हो पाता है और न ही अपना कोई निजी व्यवसाय शुरू कर पाता है। इस तरह दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली भी बेरोज़गारी को बढ़ाने में काफ़ी हद तक ज़िम्मेदार है। पहले अधिकतर ग्रामीण कुटीर उद्योगों से अपनी आजीविका चलाते थे। ब्रिटिश सरकार की कुटीर उद्योग-विरोधी नीतियों के कारण देश में इनका पतन होता चला गया। हमारा देश प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है, किंतु पूँजी एवं तकनीक के अभाव में हम इनका समुचित उपयोग नहीं कर पाते।

बेरोज़गारी के कई दुष्परिणाम होते हैं। बेरोज़गारी के कारण निर्धनता में वृद्धि होती है तथा भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो जाती है। बेरोज़गारी के कारण मानसिक अशांति की स्थिति में लोगों के चोरी, डकैती, हिंसा, अपराध की ओर प्रवृत्त होने की पूरी संभावना रहती है, क्योंकि सच्चाई यही है कि सार्वजनिक ही नहीं, निजी क्षेत्र के उद्यमों की सहायता से भी हर व्यक्ति को रोज़गार देना किसी भी देश की सरकार के लिए संभव नहीं। बेरोज़गारी की समस्या का समाधान तब ही संभव है, जब व्यावहारिक एवं व्यावसायिक रोजगारोन्मुखी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर लोगों को स्वरोज़गार अर्थात् निजी उद्यम एवं व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए प्रेरित किया जाए।

(ख) **स्वच्छता अभियान : एक नए युग का आरंभ**

हमारे प्रधानमंत्री जी ने गाँधी जी के जन्मदिवस के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत करते हुए पाँच साल में देश को साफ़-सुथरा बनाने के लिए लोगों को शपथ दिलाई कि ''ना मैं गंदगी करूँगा और ना ही गंदगी करने दूँगा। अपने साथ में 100 लोगों को साफ़-सफाई के प्रति जागरूक करूँगा और उन्हें सफ़ाई की शपथ दिलवाऊँगा।'' उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति साल में 100 घंटे का श्रम दान करने की शपथ ले और सप्ताह में कम से कम 2 घंटे सफ़ाई के लिए निकालें। अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने स्कूलों में, गाँवों में शौचालय निर्माण की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

स्वच्छ भारत अभियान को पूरा करने के लिए 5 वर्ष (2 अक्टूबर, 2019) तक की अवधि निश्चित की गई है। इस अभियान पर लगभग दो लाख करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान लगाया गया है। इसके अंतर्गत 4041 शहरों को सम्मिलित किया जाएगा। सरकार इस अभियान को निर्धारित समय अवधि में पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अभियान के प्रति जनसाधारण को जागरूक करने के लिए सरकार समाचार पत्रों, विज्ञापनों आदि के अतिरिक्त सोशल मीडिया का भी उपयोग कर रही है। 'क्लीन इंडिया' नाम से एक नई वेबसाइट की भी शुरूआत की गई है और फेसबुक जैसे प्रसिद्ध सोशल नेटवर्किंग साइट के माध्यम से भी लोगों को इससे जोड़ा जा रहा है। ट्विटर पर भी 'माइक्रो इन इंडिया' के नाम से एक ट्विटर हैंडल अकाउंट का भी शुभारंभ किया गया है। प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री जी ने सभी से अपील की है कि लोग पहले गंदी जगह की फोटो सोशल नेटवर्क साइट पर अपलोड करें और फिर उस स्थान को साफ़ करके उसकी वीडियो तथा फोटो भी अपलोड करें।

स्वच्छता समान रूप से हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। हर समय कोई सरकारी संस्था हमारे पीछे नहीं लगी रह सकती है। हमें अपनी आदतों में सुधार करना होगा और स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। हालांकि आदतों में बदलाव करना आसान नहीं होगा, लेकिन यह इतना मुश्किल भी नहीं है। हमें हर हाल में इस लक्ष्य को वर्ष 2019 तक प्राप्त करना होगा, तभी हमारी ओर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनकी 150 वीं जयंती पर सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकेगी।

(ग) **प्रदूषण की मार झेलते महानगर**

यदि शुद्ध हो पर्यावरण, यदि प्रबुद्ध हो हर आचरण।
भय दूर होगा रोग का, संतुलित होगा जीवन-मरण ॥

मानव जाति अपने उद्भव-काल से ही प्रकृति प्रेमी और प्रकृति पर आश्रित रही है। मनुष्य प्रकृति के आश्रय से कभी मुक्त नहीं हो सकता है। वैसे तो पर्यावरण की सुरक्षा हमारी सुरक्षा है, आज के वैज्ञानिक युग में विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को अपरिमित शक्ति प्रदान की है, प्रकृति को मनुष्य की दासी बनाया है, वहीं दूषित वातावरण की समस्या भी विज्ञान की ही देन है। इसी के कारण विश्व आज विनाश के कगार पर खड़ा है। प्रकृति ने पर्यावरण में कुछ ऐसी सुविधाएँ दी हैं; जिनसे मनुष्य ही नहीं, संपूर्ण प्राणि-जगत सुरक्षित रह सके, किंतु मनुष्य ने प्रगति की अंधाधुंध दौड़ में पर्यावरण को दूषित करके इतना विषैला बना दिया है कि स्वयं उसका अस्तित्व भी संकट में पड़ गया है।

प्रदूषण मानव विकास, विशेषकर औद्योगिक विकास की देन है। इससे वायु एवं जल दोनों ही प्रदूषित हो रहे हैं। बड़े-बड़े कल-कारखानों की चिमनियों से अनवरत उठने वाला धुआँ, रेल तथा अन्य प्रकार के मोटर वाहनों के पाइपों से, इंजनों से निकलने वाली गैसें और धुएँ– इन सबके परिणामस्वरूप वातावरण का दूषित हो जाना स्वाभाविक ही है। इन सबका प्रभाव मानव और जीवधारियों पर पड़ता है।

शहरों में स्वच्छ वायु के साथ-साथ स्वच्छ-शुद्ध पानी का अभाव भी पर्यावरण असंतुलन के घातक परिणाम उत्पन्न कर रहा है। घरेलू गंदा पानी, नदी-नालों में प्रवाहित मल तथा कारखानों से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थों से जल विषाक्त हो जाता है। मनुष्य, पौधों और प्राणियों को रोग से बचाने के लिए अनेकानेक रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है। उद्योगों में भी असंख्य रसायनों में वृद्धि हो रही है। शीघ्र इसके घातक परिणाम भी हमारे सामने आ गए हैं। इससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है।

महानगरों में भिन्न प्रकार के वाहनों, लाउडस्पीकरों, बाजे एवं औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के शोर ने ध्वनि-प्रदूषण को जन्म दिया है। इससे न केवल मनुष्य की श्रवण शक्ति का ह्रास होता है, वरन् उसके मस्तिष्क पर भी इसका घातक प्रभाव पड़ता है। परमाणु-शक्ति उत्पादन व नाभिकीय विखंडन ने वायु, जल व ध्वनि तीनों प्रदूषणों को विस्तार दे दिया है। आज महानगरों में प्रदूषण की समस्या ने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि महानगरीय जीवन जीना अब साक्षात विभिन्न बीमारियों को आमंत्रण देना ही है।

13. सेवा में

प्रबंधक

बैंक ऑफ इंडिया

अ ब स नगर

दिनांक–15/10/2017

विषय– एटीएम कार्ड तथा चैकबुक खोने के संबंध में

महोदय,

मैं अ ब स नगर के टैगोर टाउन क्षेत्र का निवासी हूँ। मेरा खाता बैंक ऑफ़ इंडिया में है तथा मैं आपके बैंक का ए.टी.एम. कार्ड एवं चैक बुक का भी प्रयोग करता हूँ। कल मैं सिविल लाइंस किसी कार्य से गया था। वहाँ मुझे पैसों की आवश्यकता पड़ी तो मैंने ए.टी.एम. से पैसे निकाले। इसके बाद मैं अपने घर आ गया। घर आकर देखा तो मेरा छोटा पर्स ही गायब था, जिसमें ए.टी.एम. कार्ड के साथ-साथ चैक बुक भी रखा हुआ था। संभवतः सिविल लाइंस से घर आते समय वह कहीं रास्ते में गिर गया। मेरे ए.टी.एम. कार्ड का नम्बर xxxxx6645 है तथा चैक बुक का नंबर 211xxxx से 211xxxx तक है। इन दोनों को तत्काल अप्रभावी कर दिया जाए, जिससे कोई दूसरा इसका गलत फ़ायदा न उठा पाए। मेरे कार्ड एवं चैकबुक से किसी भी तरह पैसों की निकासी न हो, इसलिए कृपया इन्हें जल्द-से-जल्द बंद कर दिया जाए।

मेरा आपसे अनुरोध है कि मुझे एक नया ए.टी.एम. कार्ड भी जारी करने की कृपा की जाए ताकि मैं अपना कार्य सुचारू ढंग से कर सकूँ। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय

प्रभाती पुष्कर

अ ब स नगर

अथवा

नई दिल्ली

दिनांक–14/10/2017

प्रिय मित्र अनिल,

नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिला। इधर मैं काफी व्यस्त था क्योंकि अपने विद्यालय में छात्र परिषद् के गठन के सिलसिले में काफ़ी भाग-दौड़ करनी पड़ गई थी। मैं भी साहित्य क्लब के अध्यक्ष पद के लिए इच्छुक था और अंततः मुझे साहित्य क्लब का अध्यक्ष चुन लिया गया। इस पद पर चुने जाने के बाद मुझे अपनी जिम्मेदारियों का अहसास भी हुआ। मुझे लगा कि अपने कार्यकाल के दौरान कुछ ऐसा कार्य किया जाए, जिसे आने वाले समय में लोग याद रखें।

अनिल! मैंने सोचा है कि उपलब्ध संसाधनों में ही साहित्य क्लब के माध्यम से लगातार ऐसी गतिविधियाँ करवायी जाएँ, जिससे सामान्य छात्रों में भी साहित्य के प्रति रुचि बढ़े। कवि सम्मेलन, कविता पाठ प्रतियोगिता, आशु भाषण, साहित्य संबंधी वाद-विवाद आदि का उच्चस्तरीय आयोजन करके अपने कार्यकाल को अधिक-से-अधिक सफल बनाने की कोशिश करूँगा। यदि इस संबंध में तुम्हारे पास कोई सुझाव हो, तो मुझे अवश्य देना। शेष अगले पत्र में। घर के सभी बड़ों को मेरा प्रणाम तथा छोटों को आशीष।

तुम्हारा मित्र

संजय

14.

'स्वच्छ धरती'

(गैर-सरकारी संस्था)

पॉलिथिन का इस्तेमाल करने से होने वाली हानियों की जानकारी देने
तथा इसका प्रयोग नहीं करने के प्रति जागरूक करने के लिए संस्था के परिसर में
दो दिवसीय सम्मेलन

आयोजन 16-17 अक्टूबर को सायं 4 बजे

नाश्ते एवं चाय की मुफ़्त व्यवस्था

संपर्क–121/44, स्वच्छ धरती, महात्मा गाँधी रोड, कानपुर

अथवा

संवेदना

महिलाओं का सम्मान, है ईश्वर का सम्मान

जिस घर में महिला हो खुश।
वहाँ कभी ना आए दुख।।

महिलाओं का सम्मान करना एक स्वस्थ समाज के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।
सभी लोगों को इसके प्रति सचेत रहना चाहिए, क्योंकि यह आपके सभ्य होने की निशानी भी है।

निवेदक–संवेदना सामाजिक संस्था, 52, सुभाष पार्क रोड, नई दिल्ली फ़ोन नं०– 98989xxxxx